Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

'भीष्मचरितम्' महाकाव्य में रीति–विवेचन

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. V, Issue X, April-2013, ISSN 2230-7540

'भीष्मचरितम्' महाकाव्य में रीति–विवेचन

Dr. Neeru Mour

House No. 209, G. H. 27, MDC Sector – 5, Panchkula, Haryana, India

संस्कृत–साहित्य में शैली के लिए 'रीति' या 'मार्ग' शब्द का प्रयोग हुआ है । काव्यशास्त्र के इसी आधार पर 'रीति–सम्प्रदाय' नाम से एक पृथक् ही सम्प्रदाय चल पड़ा । यद्यपि रीति का सर्वप्रथम सैद्धान्तिक विवेचन भामह ने किया, परन्तु रीति के स्वरूप और महत्त्व को सुस्थिर करने का श्रेय आचार्य वामन को जाता है। इन्होंने रीति की स्पष्ट व्याख्या करके इसे काव्य की आत्मा द्योषित किया ।

'रीति' शब्द गत्यर्थक 'रीङ्' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय के योग होने पर बना है, जिसका अर्थ है – गति, मार्ग, वीथि या पन्थ । भोजन ने 'सरस्वतीकण्ठाभरण' मं इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार प्रस्तुत की है–

'वैदर्भादिकृतः पन्था काव्ये मार्ग इति स्मृतः ।

रीङ्गताविति धातोः सा व्युत्पत्त्या रीतिरुच्यते ञ

इस प्रकार 'रीति' शब्द साहित्य के विभिन्न मार्गों की ओर संकेत करता है । विभिन्न आचार्यों ने 'रीति' को भिन्न–भिन्न नामों से अभिहित किया है । भरत ने इसे 'प्रवृत्ति' कहा है । भामह ने 'काव्य' तथा दण्डी ने 'मार्ग एवं वर्त्म कहा, उद्भट ने इसे 'रीति' की संज्ञा प्रदान की । रुद्रट ने वृत्ति, आनन्दवर्धन ने इसे 'संघटना' तो भोज ने 'पन्थ', 'मार्ग' तथा 'रीति' कहा । कुन्तक ने इसे 'मार्ग' और मम्मट तथा जगन्नाथ ने इसे 'वृत्ति' तथा 'रीति' दोनों नामों से अभिहित किया । इन नामों से 'रीति' नाम विशेष रूप से प्रचलित रहा, जो कालान्तर में विख्यात हो गया ।

काव्यशास्त्रियों ने इसके भिन्न–भिन्न लक्षण प्रस्तुत किए है । आचार्य वामन ने 'विशिष्ट पद–रचना' को रीति कहा है तथा पदों की रचना में यह विशिष्टता गुणों के कारण आती है । वामन ने रीति को काव्य की आत्मा सिद्ध किया है– रीतिरात्मा काव्यस्य । रुद्रट ने रीति को भौगोलिक बन्धनों से सर्वथा मुक्त करके उनको विभाजन समास के आधार पर किया । राजशेखर ने वचन–विन्यास क्रम के अनुसार रीति का विभाजन किया है । कुन्तक ने कवि–स्वभाव के आधार पर कोमल स्वभाव से वैदर्भी, कठोर स्वभाव से गौडी तथा मध्यम स्वभाव से पा×चाली मार्गों में त्रैविध्य बतलाया है । भोज गुण और समास दोनों को ही रीतियों का आधार मानते है । आनन्दवर्धन के अनुसार पदों की संघटना माधुर्य आदि गुणों का आश्रय लेकर रसों को अभिव्यक्त करती है । सर्वाधिक मत आचार्य मम्मट तथा विश्वनाथ का माना जाता है। मम्मट ने वृत्ति (रीति) को रसविषयक व्यापार कहा है । विश्वनाथ ने रीति को रस, भाव आदि की उपकारिका माना है । पण्डित जगन्नाथ ने वर्णरचनाविशेष को माधुर्य आदि गुणों का अभिव्य×जक तो माना, परन्तु रसों का नहीं ।

रीति के भेद :

विभिन्न आचार्यों ने रीति के अनेक भेद प्रस्तुत किए है। भामह तथा दण्डी ने वैदर्भ तथा गौड़ ये दो भेद स्वीकार किए है। वामन वैदर्भी गौडी तथा पा×चाली ये तीन भेद मानते है। उद्भट तथा मम्मट उपनागरिका, परुषा तथा कोमला ये तीन भेद स्वीकार करते है । रुद्रट ने रीतियों की संख्या चार मानी है, वैदर्भी, गौडी, पा×चाली तथा लाटी । विश्वनाथ भी इनसे प्रभावित रहे है । आनन्दवर्धन इन्हें उपर्युक्त नामों से अभिहित न करके उनके असमासा, मध्यसमासा तथा दीर्घसमासा ये तीन भेद मानते है। रीति को काव्य की आत्मा स्वीकार करने वाले एकमात्र आलंकारिक आचार्य वामन ही है । यद्यपि वामन के पूर्ववर्ती तथा परवर्ती आचार्यों ने रीति को आत्मस्थानीय नहीं माना है तथापि कवि–समाज ने रीति का महत्त्व मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया गया है ।

'भीष्मचरितम्' महाकाव्य में रीति–विवेचन :

प्रस्तुत महाकाव्य में प्रायः माधुर्यगुणयुक्त 'वैदर्भी' रीति को ही अपनाया है । परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि इन्होंने अन्य रीतियों को स्पर्श ही नहीं किया, अपितु कवि ने प्रसंगानुकूल अन्य रीतियों का भी न्यूनाधिक प्रयोग किया है । प्रायः समस्त अलंकारिकों ने रीति तत्त्व के प्रतिष्ठापक वामन के अनुसार वैदर्भी, गौडी और पा×चाली रीतियों को ही स्वीकार किया है । अतः इन तीन रीतियों के परिप्रेक्ष्य में ही भीष्मचरित की समीक्षा प्रस्तुत है।

वैदर्भी रीति :

माधुर्यव्य×जक वर्णों से युक्त, लालित्यपूर्ण तथा समासरहित तथा अल्प समासों से युक्त रचना वैदर्भी रीति कही जाती है। यह श्रृंगार, करुण आदि रसों का उपकार करती है । मम्मट ने इसे 'उपनागरिका वृत्ति' कहा है । भीष्मचरित महाकाव्य में वैदर्भी की सुन्दर अभिव्य×जना हुई है । यथा – प्रस्तुत महाकाव्य के षोडश सर्ग में भीष्म पितामह श्रीकृष्ण से समस्त प्राणियों के सुखमय जीवन की कामना करते है ।

भवन्तु सर्वे सुखिनोऽत्र भूतले

भवन्तु सर्वाश्च निरामयाः प्रजा ।

भवन्तु सर्वे च निराहवा नृपाः

इत्येव हे कृष्ण ! लषामि साम्प्रतम

यहाँ ट, ठ, ड, ढ से रहित माधुर्यव्य×जक वर्णों का प्रयोग 'भवन्तु' पदों में तकार का अपने वर्ग के प×चम वर्ण न् (न्त) के

www.ignited.in

साथ संयोग तथा अल्पसमासयुक्त मधुर शब्दों का प्रयोग होने के कारण वैदर्भी रीति है। इसके अतिरिक्त अन्यत्र स्थल पर भी वैदर्भी रीति की सुन्दर अभिव्य×जना हुई है ।

गौडी रीति :

ओजोगुण को प्रकाशित करने वाले अक्षरों से उद्धत वर्णघटित रचना और प्रचुर समासों वाली रीति को 'गौडी' कहते है। यह वीर, वीभत्स आदि रसों में पाई जाती है । मम्मट ने इसे 'परुषा' वृत्ति कहा है । प्रस्तुत महाकाव्य में अर्जुन के पराक्रम के चित्रण में गौडी रीति का प्रयोग हुआ है ।

शस्त्रास्त्र–विद्याबल–शौर्यशालिना

कर्णेन विक्रम्य दिनद्वयं रणे ।

विच्छिन्न शीर्षेन धन×जयेषुणा

द्युलोकयात्रा विहिता प्रतापिना ॥

उपर्युक्त पद्य में शस्त्र, अस्त्र, शौर्य, कर्णेन, शीर्षेण, यात्रा और प्रतापिना पदों में रेफ का ऊपर और नीचे का संयोग होने से तथा 'विच्छिन्न' में च और छ के योग से ओजोव्य×जक वर्णों तथा दीर्घ समासों का प्रयोग होने से गौडी रीति है । कवि ने महाकाव्य में प×चदश सर्ग के 13वें षोडश सर्ग के 42वें तथा सप्तदश सर्ग के 28वें पद्यों आदि में गौडी रीति का प्रयोग किया है ।

पा×चाली रीति :

वैदर्भी एवं गौडी दोनों रीतियों से शेष वर्णों से युक्त रचना अर्थात् जो वर्ण न तो माधुर्य के व्य×जक है और न ही ओज के और जहां पांच, छः पदों का समास हो, वहाँ पा×चाली रीति होती है। मम्मट ने इसे 'कोमला' वृत्ति के नाम से अभिहित किया है। कवि ने राजा शान्तनु की विरहदशावर्णन में पा×चाली रीति का प्रयोग किया है ।

क्षणविनाशिशरीरसुखाप्तये

मनुजधर्मवधं न करोम्यहम् ।

मम मते नृपधर्मचितानलः

प्रियतमाविरहानलतो महान्

यहां न तो वैदर्भी रीति है और न ही गौडी, यहां जो वर्ण प्रयुक्त हुए है, वे न तो स्पष्टतया माधुर्य के व्य×जक है और न ही ओज के । साथ ही पांच छः पदों का समास भी यहां है । अतः यह पा×चाली रीति का सुन्दर उदाहरण है । उपर्युक्त पद्य के अतिरिक्त महाकाव्य के अन्य पद्यों में भी पा×चाली रीति का प्रयोग किया गया है ।

निष्कर्षतः भीष्मचरित महाकाव्य में वैदर्भी, गौडी और पा×चाली रीतियों का सुन्दर समावेश किया गया है । जिससे यह महाकाव्य अत्यन्त मनोरम हो गया है ।

संदर्भ

1. रीतिरात्मा काव्यस्य, काव्यालङ्कारसूत्र, 1.26
2. स्त्रियां क्तिन् । अष्टाध्यायी, 3.3.94
3. सरस्वतीकण्ठाभरण, 2.27
4. विशिष्टा–पदरचना रीतिः । विशेषो गुणात्मा । रीतिरात्मा काव्यस्य । काव्यालंकारसूत्र, 1.26
5. वृत्तेरसमासामा वैदर्भी रीतिरेकैव । काव्यालंकार, 2.5–6
6. वचनविन्यासक्रमो रीतिः । काव्यमीमांसा, अध्याय 3, पृ॰ 25
7. वक्रोक्तिजीवितम्, 1.24 की वृत्ति
8. गुणानाश्रित्य तिष्ठन्ती माधुर्यादीन् व्यनक्ति सा रसान् । ध्वन्यालोक, 3.6
9. वृत्तिर्नियतवर्णगतो रसविषयो व्यापारः । काव्यप्रकाश, 9.78 के उपरान्त
10. पदसंघटना रीतिरङ्गसंस्थाविशेषवत् । उपकर्त्री रसादीनाम् । साहित्यदर्पण, 9.1
11. वर्णरचनाविशेषाणां माधुर्यादिगुणाभिव्यंजकत्वमेव न रसाभिव्यंजकत्वम् गौरवान्मानाभावाच्च । रसगंगाधर, प्रथम आनन, पृ॰ 325
12. वैदर्भमन्यदस्तीति मन्यन्ते सुधियोऽपरे । तदैव च किल न्यायः सदर्थमपि नापरम् ॥ काव्यालंकार, 1.31
13. काव्यादर्श, 1.40
14. काव्यसारसंग्रह, 1.6–10
15. काव्यप्रकाश, 9.80
16. काव्यालंकार, 2.5–6
17. साहित्यदर्पण, 9.1–2
18. असमासा समासेन मध्यसेन च भूषिता । तथा दीर्घसमासेति त्रिधा संघटनोदिता ॥ ध्वन्यालोक, 3.5
19. माधुर्यव्य×जकैर्वर्णैः रचना ललितात्मिका ।
20. अवृत्तिरल्पवृत्तिर्वा वैदर्भी रीतिरिष्यते ॥ साहित्यदर्पण, 9. 2–3
21. माधुर्यव्य×जकैर्वर्णैरुपनागरिकोच्यते । काव्यप्रकाश, 9. 79
22. डॉ॰ हरिनासायणदीक्षितः भीष्मचरितम्, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 5825, न्यूचन्द्रावल, जवाहरनगर, दिल्ली–7, 1992 ई॰, श्लोक 16.36
23. भीष्मचरितम्, 9.16

24. ओजः प्रकाशकैर्वर्णैबन्ध..... । साहित्यदर्पण, 9.3

25. ..... ओजः प्रकाशकैस्तैस्तु परुषा..... । काव्यप्रकाश, 9. 79 के पश्चात्

26. भीष्मचरितम्, 15.15

27. ..... वर्णैः शेषैः पुनर्द्वयोः समस्तप×चषपदो बन्धः पा×चालिका मता

28. साहित्यदर्पण, 9.4

29. कोमला परैः । काव्यप्रकाश, 9.80

30. भीष्मपरितम्, 9.37,

31. उपरिवत्, 8.13, 8.33, 13.58